A Quarterly Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 7, Issue - III, April to June 2010

इतने ऊंचे उठो कि जितना उठा गगन है।

नये हाथ से वर्तमान का रूप संवारो,
नई तूलिका से चित्रों का रंग उभारो
नये राग को नूतन स्वर दो
भाषा को नूतन अक्षर दो
युग की नई मूर्ति रचना में
इतने मौलिक बनो कि
जितना स्वयं सृजन है।

लो अतीत से उतना ही जितना पोषक है
जीर्णशीर्ण का मोह मृत्यु का ही द्योतक है,
तोड़ो बंधन, रुके न चिंतन गति
जीवन का सत्य चिरंतन
धारा के शाश्वत प्रवाह में
इतने गतिमय बनो कि जितना परिवर्तन है।

–द्वारकाप्रसाद माहेश्वरी

World Environment Day: June 5
Shrut Panchami: June 16

Pride of Society

प्रो. पंडित (डॉ.) रतनचन्द्र जैन

75 वर्ष पूर्ण करने पर अमृत अभिनन्दन

मध्यप्रदेश के लुहारी (सागर) ग्राम में 2 जुलाई 1935 को जन्मे पंडित जी ने, श्री गणेश दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय सागर में धर्मग्रंथों का अध्ययन करते हुए संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं पर अधिकार अर्जित किया। एम.ए. (संस्कृत) परीक्षा आपने स्वावलम्बी छात्र के रूप में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। प्रारम्भ से ही अध्ययनशील पंडितजी ने बरकतउल्ला विश्व विद्यालय भोपाल से अपने शोध–कार्य "जैन दर्शन में निश्चय और व्यवहार" पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

प्रोफेसर रतनचन्द्र जी ने शासकीय टी.आर.एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय रीवा (म.प्र.), हमीदिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय भोपाल एवं बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल में लेक्चरर, प्रोफेसर एवं रीडर के रूप मे अध्यापन कार्य किया है। आपके मार्गदर्शन में लगभग बीस छात्र–छात्राओं ने विभिन्न विषयों में पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की है। आपको आल इण्डिया ओरिएण्टल कान्फ्रेंस में सर्वोत्कृष्ट शोधपत्र, अखिल भारतवर्षीय निर्वाण महोत्सव समिति दिल्ली द्वारा उत्कृष्ट निबंध, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् द्वारा 1980 में प्रथम पुरस्कार, महावीर पुरस्कार वर्ष 1998, श्रुतसंवर्द्धन पुरस्कार वर्ष 1999, अहिंसा इण्टरनेशनल प्रेमचन्द्र जैन पत्रकारिता पुरस्कार वर्ष 2004, महाकवि रइधू पुरस्कार वर्ष 2009 से सम्मानित किया गया है। प्रोफेसर रतनचन्द्र जी के अनेक शोधपत्रों के अतिरिक्त दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ "जैनदर्शन में निश्चय और व्यवहारनय : एक अनुशीलन" एवं "जैनपरम्परा और यापनीयसंघ" ग्रन्थ प्रकाशित हुये हैं। पंडित जी इस वय में भी अत्यंत सक्रियता पूर्वक "जिनभाषित" जैसी लोकप्रिय मासिक पत्रिका का नियमित सम्पादन कर रहे हैं।

Young Achiever

Ms. Lakshita Jain, Udaipur
XII Commerce 95.8%

Sugam Jain, Shivpuri
District Topper, XII Commerce, CBSE 94%

Pritesh Jain, Aurangabad
College Topper, Diploma Mech. Engineering 92.40%

Siddharth Jain, Kota
IIT-JEE AIR 1898
Strict follower of moral values

Chirping Sparrow Year - 7, Issue - III

Chirping Sparrow is published quarterly by the
Maitree Jankalyan Samiti
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com,
Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of **Maitree Jankalyan Samiti.**

Jainism: An Eco-Friendly Way of Living

Special on World Environment Day: June 5

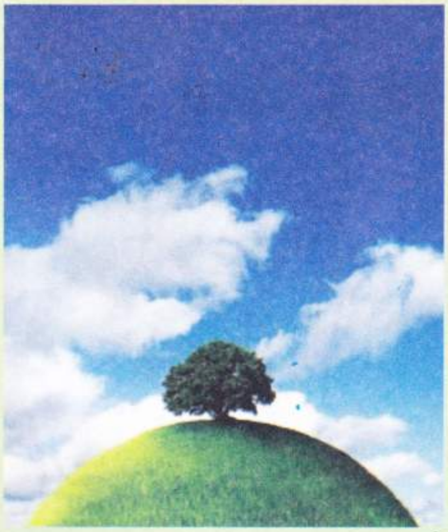

From bullock carts to jets, science has made enormous progress. Today we use gadgets which no one could even imagine a century ago. We live in an age of ready-to-use-products with a life style which is very distant from nature. And as a result, today, we are at crossroads where we can no longer afford to ignore the threats of global warming and climate change. It's high time that we readjust our lifestyles to care for our mother earth and preserve resources for the future generations. The Jainism way of living, rooted in Ahimsa, Asceticism, Apraighraha, and Sarvodaya, is very tender towards the nature and offers a comprehensive solution to all environmental problems. Jain Agamas (Holy texts) have elaborate discussions on the life style of humans. They detail out eco-friendly ways even for the minute day to day activities. Jainism tries to shape our attitude toward nature by prescribing humane and nonviolent approaches to everyday behavior.

The central tenet of Jainism i.e. Ahimsa or the theory of nonviolence, involves avoidance of killing- not just of humans and animals but of all living beings. The Ahimsa in Jainism is defined as love and affection for all living beings. The definition is not limited to just include the obvious animate things like human and animals but it believes in the presence of soul even in the inanimate things also, which are generally deemed as non-living by others. Water, air, fire, earth and trees are considered 'Sthavar Jeev' (immobile) in Jainism. Vegetarianism, drinking of filtered water, prohibition of leather, not eating vegetables which cause whole plants to be uprooted, limiting usage of motor operated vehicle and the other aspects of the code of conduct are not merely manifestation of Ahimsa in our daily life. In fact these practices are also deeply woven around the idea of protecting our environment and ecosystem.

The present environmental problem also lies in our prevalent model of uncontrolled consumerism and our definition of development, which has established consumerism as an index of development. Nations, societies and people are considered developed and civilized on the basis of their scale of consumption. This seems to have triggered a mad race for more and more consumerism. However any development can be sustainable only if the consumption inter-alia exploitation of resources is limited to their carrying capacity and renewability. Ignorance of mankind has actually put the whole living fraternity in crisis of existence.

Jainism with its principles of Aprigraha, strongly advocates against the blind and indiscreet consumption. It also lays emphasis on sustainable development and does not permit anyone to exploit even the material things.

The term for ecology and its protection in Jainism is Sarvodaya- the concern for lifting up all life forms, as articulated by Samantabhadra (third century A. D.), the prominent Jain philosopher. Acharya Jinasena explained the same view of social equality by saying that the entire world is one because of its inter-relatedness. Jain ecology is based on central tenets of spirituality, equality and inter-relatedness. Each life form, plant, or animal, has an inherent worth and each must be respected. Jainism presents a worldview that stresses the interrelatedness of life-forms rooted in the firm belief that souls and living beings help each other. Jainism paves the way to understand the importance and relevance of nature, plants, worms, animals, and all sorts of creatures with their own importance for maintaining ecological balance. These non-violent and eco-friendly ethics can easily be extended to adopt them as the earth ethics. Practice of these principles leads the practitioners to the conservation of our mother earth. Jains have a history of advocacy against meat eating and animal sacrifice, as well as their success at developing business areas that avoid overt violence. Jains, even today, practise these principles and religious traditions prescribed for the protection of nature. Through its philosophy, its ascetic practices, and in its narrative arts and architecture, Jainism and its leaders have made efforts to create the society dedicated to love for all creatures.

Alok Jain, Banglore

जैन जीवन शैली : पर्यावरण मित्र

5 जून, पर्यावरण दिवस पर विशेष

बैलगाड़ी से लेकर हवाई जहाज तक विज्ञान ने बहुत तरक्की की है, आज हम जो साधन इस्तेमाल करते हैं, एक शताब्दी पहले किसी ने उनकी कल्पना भी नहीं की थी। हम तुरंत प्रयोग में आने वाली डिब्बा बंद वस्तुओं का जिस तरह प्रयोग कर रहे हैं और जिस तरह की जीवन शैली अपना रहे हैं, वह हमें प्रकृति से दूर ले जा रही है, जिसका परिणाम यह है कि हम ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहाँ से ग्लोबल वार्मिंग और वातावरण परिवर्तन जैसी समस्याओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। अब यह आवश्यक हो गया है कि हम अपनी धरती माता को बचाने के लिए अपनी जीवन चर्या को बदलें और आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखें। अंहिसा, संयम, अपरिग्रह तथा सर्वोदय के समन्वय से बनी जैन जीवन शैली पर्यावरण के लिए सबसे अनुकूल है और पर्यावरण सम्बन्धी सभी समस्याओं का हल है।

जैन आगम में आदर्श जीवन चर्या सम्बन्धित विस्तृत चर्चा मिलती है। आगम में जीवन की दैनिक छोटी से छोटी क्रियाओं को भी पर्यावरण का पूरा ख्याल रखते हुए समझाया गया है। जैन दर्शन हमारे प्रतिदिन के व्यवहार में मानवीयता तथा अहिंसा को पिरोकर हमारा व्यवहार प्रकृति की तरफ मोड़ने का प्रयास करता है। जैन धर्म के मूल सिद्धांत अंहिसा के तहत न सिर्फ मनुष्यों और प्राणियों बल्कि सभी जीवों के प्रति सभी प्रकार की हिंसा को रोकने का सन्देश दिया गया है। जैन दर्शन के अनुसार अहिंसा का अर्थ है – सभी जीवों के प्रति प्रेम तथा अनुराग रखना। यह परिभाषा केवल चल जीवों जैसे मनुष्य, प्राणियों एवं वनस्पतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इस परिभाषा के अनुसार अचल वस्तुओं में भी प्राणों की उपस्थिति मानी गयी है, जिन्हें की अक्सर अजीव माना जाता है। जल, वायु, अग्नि, भूमि एवं वनस्पतियों को जैन दर्शन में स्थावर जीव माना गया है। शाकाहार,छाना हुआ पानी पीना, चमड़े का त्याग, कंद–मूल आदि वनस्पतियों का त्याग (जिसे निकालने में संपूर्ण पौधा नष्ट हो), मोटर चालित वाहनों का सीमित प्रयोग तथा ऐसी ही अन्य व्यवस्थाएं पर्यावरण की सुरक्षा में बेहद कारगर हैं। वर्तमान में हम पर्यावरण संबंधित जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं उनकी जड़ें अनियंत्रित उपभोक्तावाद तथा विकास की गलत अवधारणाओं से जुड़ी हुई हैं। जिनके अनुसार उपभोक्तावाद को विकास का मापदंड मान लिया गया है। देश, समाज और लोग संसाधनों का जितना अधिक उपभोग करें वे उतने ही विकसित और सभ्य माने जाते हैं। इसके कारण अधिकाधिक उपभोक्तावाद के लिए एक अंधी होड़ सी शुरू हो गयी है। विकास की प्रक्रिया तभी तक चल सकती है जब तक संसाधनों का उपभोग या दोहन उन संसाधनों की उपलब्धता तथा नवीनीकरण तक सीमित हो। मनुष्यों की इस अनदेखी होड़ ने सभी जीवों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है।

जैन दर्शन का अपरिग्रह का सिद्धान्त अंधे तथा विवेकहीन उपभोग का कड़ा विरोध करता है। यह सिद्धान्त दीर्घकालिक विकास की प्रक्रिया पर बल देता है और अजीव तत्त्वों के अविवेकपूर्ण दोहन की आज्ञा नहीं देता। जैन दर्शन न केवल सजीव वस्तुओं बल्कि भौतिक साधनों के उपयोग में भी बोधपूर्वक काम करने के लिए प्रेरित करता है। पारिस्थितिकी (Ecology), पर्यावरण तथा उसके संरक्षण के लिए जैन धर्म में सर्वोदय (समंतभद्र – इसवीं संवत्– तृतीय) – सभी जीवों का उत्थान शब्द रखा है। आचार्य जिनसेन ने सामाजिक समानता के इसी सिद्धांत को यह कह कर समझाया है कि संपूर्ण संसार अपने अन्तर्निहित संबंधों के कारण एकरूप है। जैन पारिस्थितिकी विज्ञान आध्यात्मिकता, परस्परोपग्रह और समानता के सिद्धांतों पर आधारित है । प्रत्येक जीव चाहे वह प्राणी हो या वनस्पति उसकी एक निहित योग्यता है तथा हमें उसका सम्मान करना चाहिए। प्रत्येक जीव को अपने से जुड़ा हुआ मानने से हम एक अध्यात्मिक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं जिससे हमें जीवन की पवित्रता का भान होता है, जिसकी रक्षा प्रकृति के नियमों द्वारा ही संभव है। जैन दर्शन प्रकृति की उपयोगिता को समझने का रास्ता सुझाता है और प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने में वनस्पतियों, प्राणियों तथा अन्य जीवों के महत्त्व को बताता है। जैन दर्शन एक वैश्विक दृष्टिकोण देता है, जिसके अनुसार सभी जीव एक दूसरे पर आश्रित हैं। अहिंसा के इस सिद्धान्त को हम आसानी से वैश्विक सिद्धान्त के रूप में स्थापित कर सकते हैं। इन सिद्धान्तों का पालन करने वाला वास्तव में धरती माँ के संरक्षण में मदद करता है। जैन इतिहास सदैव ही मांसाहार, बलि प्रथा आदि का विरोध करने के साथ–साथ कम हिंसा वाले व्यवसायों के विकास करने के लिए जाना जाता रहा है। जैन श्रावक आज भी प्रकृति के संरक्षण के लिए बताये गए इन सिद्धान्तों तथा धार्मिक परम्पराओं को अपनाते हैं। अपने दर्शन, संयम, साहित्य तथा स्थापत्य कला द्वारा जैन धर्म तथा उसके नेताओं ने एक ऐसे समाज को बनाने का प्रयत्न किया है जो सभी जीवों के प्रति स्नेह का संदेश देता है।

– आलोक जैन, बैंगलोर
(अनुवाद – श्वेता जैन, हैदराबाद)

आपके प्रश्न

Q. जाप देते समय मच्छर आदि के काटने पर ध्यान तो भंग होता ही है, ऐसे में जाप निरंतर करते रहने में तो मच्छर के कारण आकुलता बनी ही रहती है। तो क्या मच्छर को हटा कर पुनः जाप शुरू कर देनी चाहिए या जाप निरंतर करते रहना चाहिए?

– अनुभा जैन, भोपाल, MPX 4016

A. वैसे तो ध्यान करने से पहले कुछ बातों का ख्याल रखना चाहिए जैसे सामायिक या ध्यान एकान्त में या बाधा रहित जंगल या घर में या जिनालय में प्रसन्नचित्त होकर करना चाहिए। स्थान साफ–सुथरा और सब प्रकार की बाधाओं से रहित होना चाहिए। जिस स्थान पर मच्छर या अन्य कीड़े, चींटियां वगैरह अधिक हों उस स्थान पर सामायिक या ध्यान नहीं करना चाहिए। अच्छे स्थान पर भी यदि कोई बाधा आ जाती है तो उसे यथाशक्ति सहन करना चाहिए, अगर सहन न हो और आकुलता होने लगे तो वह स्थान छोड़ देना चाहिए या बाधा दूर करने की कोशिश करनी चाहिए और फिर निर्विकल्प होकर सामायिक या ध्यान आदि धार्मिक क्रियायें करना चाहिए।

Q. यदि कोई कहता है कि मैं प्रवचन या किसी धार्मिक शास्त्र को चरितार्थ नहीं कर पाता तो उनके सुनने या पढ़ने का कोई मतलब नहीं है, तब उसके समक्ष इसका उत्तर किस प्रकार रखना चाहिए ?

– अनुभा जैन, भोपाल, MPX 4016

A. प्रवचन या धर्मशास्त्र का ठीक वैसा ही पालन बहुत मुश्किल है। स्वयं वक्ता भी कई बार उनका पूर्णतः पालन नहीं कर पाते। पर यह नहीं समझना चाहिए कि जब पूर्णतः उसका पालन करेगें तभी सुनेगें, भगवान की वाणी तो सब जीवों का कल्याण करने वाली है, उसे वक्ता के द्वारा करूणा पूर्वक कहा जाता है, इसलिए उसे ध्यान से सुनना चाहिए भले ही उस पर अमल ना कर सकें पर वाणी तो कानों में पडती है। जो पुण्य का कारण है। एक चोर के पिता ने उससे कहा कि भगवान महावीर की वाणी कभी भूलकर भी नही सुनना, नही तो तुम चोरी नहीं कर पाओगे। वह चोर एक बार रास्ते से निकल रहा था, जहाँ भगवान की वाणी सुनाई दे रही थी, तो उसने अपने कान हाथ से बंद कर लिए तभी अचानक उसके पैर को एक कांटा चुभ गया और उसके हाथ कान पर से हट गये और सुनाई पड़ा कि देवों की पलकें नहीं झपकती और छाया नहीं पड़ती। एक बार जब वह चोरी करते हुए पकड़ा गया तो उसे स्वर्ग जैसा माहौल बना कर के पूछा गया कि तुम स्वर्ग में आ गये हो तो तुम अपने सारे अपराध सही–सही बताओ। उसने देखा कि देवों की पलकें झपक रही हैं और छाया भी पड़ रही है तो वह समझ गया कि यह तो उसके साथ धोखा है। उसने कुछ नहीं बताया तो वह छूट गया तब उसने सोचा कि जब दो बातें भगवान की सुनने से चोरी की सजा से बच गया तो अब मैं भगवान की वाणी प्रतिदिन सुनूंगा। और एक घटना बतायें, कटनी की एक अम्मा मंदिर में आकर शास्त्र पढ़ा करती थीं। मैं सामायिक करता रहता था – एक दिन मैंने उनसे पूछा कि आप क्या पढ़ती रहती हैं ? तो उन्होनें सहज भाव से कहा कि महाराज मैं सिद्धांत धवला जी का स्वाध्याय करती रहती हूँ। मैंने पूछा कि आपकी समझ में आता है ? तो वे साफ–साफ कहने लगीं कि महाराज समझ में तो कुछ नहीं आता। बस पढ़ती हूँ। भगवान की वाणी है, ऐसा सोचकर पढ़ती हूँ कि मन लगा रहे और राग द्वेष ना हो।

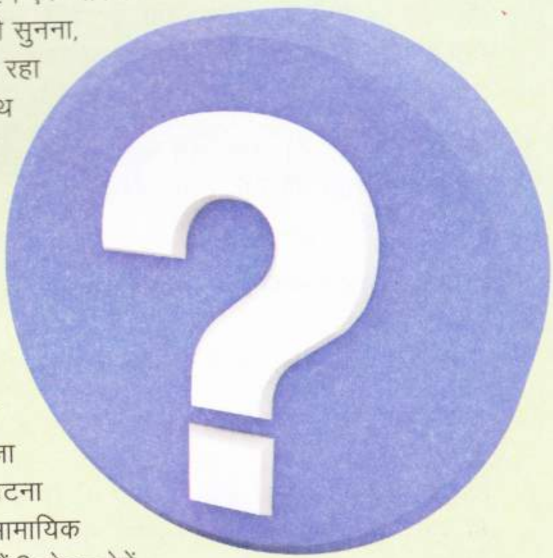

Q. यदि किसी मन्दिर में ऊपरी तल व निचले तल पर दो वेदिया हों जैसे नीचे पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा तथा उसी वेदी के ऊपरी तल पर बाहुबली भगवान की मूर्ति है तो क्या दोनों जगह प्रदक्षिणा देना चाहिए या नहीं ? स्पष्ट करें।

– नीविधा शाह, देवास

A. मन्दिर जी में दर्शन के समय प्रदक्षिणा तो दोनों जगह देना चाहिए। यदि प्रदक्षिणा के योग्य स्थान नहीं है तो तीन बार झुककर प्रणाम करना चाहिए, ऐसा करने से सही दर्शन हो जाएंगे।

आपके प्रश्न

Q. How do we know if we are moving in the right or wrong direction?

– महिमा जैन, शाहपुर

A. हम देखें की जो हम कर रहे हैं उससे दूसरे का अहित तो नहीं होता। काम करने की सही दिशा तो वह है, जिससे दूसरे का और अपना भला हो, अगर काम करने पर उससे अपना थोड़ा सा अहित होता है पर दूसरे का हित होता है, तो वह काम भी अच्छा है। इस प्रकार हम निर्णय कर सकते हैं कि कौन सा कार्य अच्छा है और कौन सा बुरा।

Q. What is the Truth of life?

– महिमा जैन, शाहपुर

A. जीवन का सच्चा सुख मोक्ष में है, और मोक्ष पाना ही जीवन की वास्तविक सच्चाई है। इसलिए हमें सच्ची श्रद्धा, ज्ञान और समुचित आचरण प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। वीतराग देव, शास्त्र और गुरू पर सच्ची श्रद्धा रखकर अपना आचरण उज्ज्वल बनाना चाहिए। सत्संग और सदाचार पालन करके हम जीवन की सच्चाई को प्राप्त कर सकते हैं।

Q. क्या सूतक पातक के समय में मन्दिर जी में चातुर्मास आदि की पत्रिकाएँ छू सकते हैं ?

– सीमा जैन, शिवपुरी, मध्यप्रदेश

A. सूतक पातक के समय दूर से दर्शन कर सकते हैं पर मन्दिरजी की कोई भी चीज को छू नहीं सकते फिर चाहे चातुर्मास की पत्रिकाएँ ही क्यों न हो। सूतक पातक एक तरह से प्रायश्चित है इसलिए ध्यान रखना चाहिए।

Q. मुनिश्री मुम्बई हमलों का एक आतंकवादी है – कसाब। उसने कितने ही मासूमों की जान ली है, कितने ही लोगों को मौत के कुएँ में धकेल दिया है। यदि उसे फांसी नहीं दी जाती है तो वह फिर से हजारों–लाखों लोगों का खून बहाएगा, हिंसा करेगा तो फिर क्या अनगिनत लोगों की जान बचाने के लिए उसे फांसी देना हिंसा होगी ?

– सिल्की जैन, गुना, मध्यप्रदेश

A. अनगिनत लोगों की जान लेने वाले को तो फांसी की शिक्षा देना चाहिए। ऐसा करने से लोगों को गलत कार्य न करने की शिक्षा मिलेगी ऐसा करना विरोधी हिंसा कहलाएगा जो कि श्रावक कर सकता है उसके लिए ऐसा करना क्षम्य है.।

Q. क्या पंचम काल के सभी लोग नरक में जाएंगे?

– प्रियंक मंडल, गुना

A. पंचम काल में भी व्यक्ति अपने पुरूषार्थ के अनुसार देव, नरक तिर्यंच अथवा मनुष्य गति में जा सकता है।

Q. कृष्ण लेश्या अशुभ मानी जाती है। क्या भगवान के कृष्ण वर्ण की प्रतिमा से इसका कोई संबंध है या नहीं?

– अजय सेठी, अजमेर

A. जिसके द्वारा जीव पुण्य–पाप से अपने को लिप्त करता है उसे लेश्या कहते हैं। अथवा कषाय अनुरंजित मन, वचन, काय की प्रवृत्ति को लेश्या कहते हैं। कृष्ण, नील, कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएं है और पीत, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं है। छःहों लेश्याएं द्रव्य व भाव के भेद से दो प्रकार की हैं। वर्ण नाम कर्म के उदय से उत्पन्न हुआ जो शरीर द्रव्य का रंग, वर्णादि है, वह द्रव्य लेश्या है। कषाय से अनुरंजित मन, वचन और काय की प्रवृत्तियों की भाव–दशा भाव लेश्या है। जीवों में द्रव्य और भाव लेश्या के समान होने का नियम नहीं है। भगवान के शरीर के वर्ण के पांच प्रकार के होते हैं। दो भगवान श्वेत रंग के, दो साँवले रंग के, दो हरे रंग के, दो लाल रंग के तथा शेष सभी सोने के समान रंग वाले होते हैं। चंदेरी आदि स्थानों पर इन्हीं रंगों वाली चौबीस प्रतिमाएँ हैं। बाकी प्रतिमाएँ सामान्यतः काले या सफेद पाषाण की या पीतल की बनाई जाती हैं। इनका रंग लेश्या से कोई संबंध नहीं रखता। तीर्थंकर की भाव लेश्या हमेशा शुभ होती है भले ही प्रतिमा का रंग जो भी हो।

आपकी भी कोई शंका या प्रश्न हो तो हमें लिख भेजें। मुनिश्री द्वारा इसका उत्तर दिया जाएगा।
पता – मैत्री समूह, पोस्ट बॉक्स नम्बर 15, विदिशा (मध्यप्रदेश) पिनकोड – 464 001

"मित्रता"

एक छोटा सा बेटा था और उसकी झोपड़ी के सामने एक वृक्ष था। वह बेटा उस वृक्ष के नीचे खेलने चला जाता था। पता नहीं कब कैसे घटित हुआ, पर कहते हैं, उस वृक्ष को उस बेटे से स्नेह हो गया और वे दोनों एक मित्र की तरह रहने लगे। बेटे को उस पेड़ के समीप रहना, उसके पत्ते, फल, फूल और ड़ालियों के साथ खेलना अच्छा लगता था।

धीरे–धीरे बेटा बड़ा होने लगा। अब तो वह निचली शाखाओं को छू सकता था। लोगों ने तो ऐसा भी देखा कि जब वह बेटा पेड़ की तरफ गौर से देखता था और कोई फल तोड़ना चाहता था तो वृक्ष अपनी डाल को थोड़ा सा नीचे झुका देता था। कुछ दिन में बेटा और बड़ा हो गया और अब तो उसे पेड़ के पास जाने का समय भी नहीं मिलता। वह अब नहीं जाता था वृक्ष के पास, पर वृक्ष जैसे आवाज देता था मित्र आओ, आते क्यों नहीं। और जब एक दिन पेड़ वाले रास्ते से वह बेटा गुजरा तो उस वृक्ष ने आवाज दी – आओ मित्र! अब तो तुम पहले की तरह मेरे पास बैठते ही नहीं। बताओ तुम्हें क्या चाहिए? बेटे ने कहा –इतनी फुर्सत नहीं है कि मैं तुम्हारे पास बैठ सकूं। तुम्हारे पास देने को क्या है? क्या तुम मुझे रुपये दे सकते हो? वृक्ष ने कहा – रुपये तो मैं दे नहीं सकता पर सुनो ऐसा करो कि मेरी ड़ालियों पर सैकड़ों फल लगे हैं इन्हें बाजार में बेच देना। अब उस बेटे का आना फिर शुरू हो गया। कुछ दिनों में सारे फल तोड़ लिए गये और बेटे का आना फिर बन्द हो गया। वृक्ष फिर भी उसे आवाज लगाता रहता था। एक दिन फिर जब वह बेटा वृक्ष के नीचे से गुजरा तो वृक्ष ने उसे आवाज दी। उसकी पदचाप सुनकर वह पहचान गया था। उसने आवाज दी– मित्र बैठो, तुम तो आते ही नहीं। बेटे ने कहा –क्या करूं आकर? तुम क्या दे सकते हो मुझे? वृक्ष ने कहा – बताओ क्या चाहिए तुम्हें? बेटे ने कहा – मुझे घर चाहिए। तुम घर दे सकते हो?वृक्ष ने कहा – घर तो नहीं दे सकता, पर चाहो तो मेरी शाखाएं काट कर ले जाओ, इनसे अपना घर बना लो।

एक बार फिर मित्र का आना शुरू हो गया। गाड़ियाँ आने लगीं, शाखाएं काटी जाने लगी। पर वृक्ष खुश है कि वह अपने मित्र को कुछ दे सका। और जब सारी शाखाएँ कट गईं और वृक्ष के नाम पर सिर्फ एक ठूंठ रह गया तो वह मित्र उसे फिर छोड़ कर चला गया। फिर उसका आना बन्द हो गया। वृक्ष फिर भी निरन्तर आवाज देता था।

फिर एक दिन वह मित्र बूढ़ा हो गया और वृक्ष के रास्ते से गुजरा तो पेड़ ने कहा, 'अरे मित्र तुम आते ही नहीं, कहो मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ?' मित्र ने कहा – "मुझे दूर देश की यात्रा करनी है। क्या तुम मुझे नाव दे सकते हो?" वृक्ष ने कहा–"नाव तो तुम बना सकते हो। नाव बनाने के लिए लकड़ी मैं दे सकता हूँ। अभी भी मेरे पास कुछ लकड़ी बची है और सूखी और हल्की भी है। तुम्हारे बहुत काम आयेगी।" और कहते हैं उस बूढ़े मित्र ने बिना सोचे समझे कि लकड़ी काट लेने पर पेड़ का जीवन शेष रहेगा भी या नहीं उस ठूंठ को भी ताराश लिया और नाव बनाना शुरू कर दी, पर वृक्ष खुश है। अभी भी उसकी थोड़ी साँसें बाकी हैं। वह खुश है कि उसका मित्र दूर देश की यात्रा कर सकेगा। जब नाव बन गई और मित्र जाने लगा तो पेड़ ने कहा – "मित्र हो सके तो लौटकर वापस मिलना जरूर, मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा।" जो भी यात्री उस पेड़ के पास से गुजरता पेड़ उससे पूछता– "तुम्हें मेरा मित्र मिला था?" वो भी दूर देश की यात्रा करने गया है। मेरी साँसें तो दो चार ही शेष हैं कहीं मिले तो कहना कि उसका मित्र उसे बहुत याद करता है। और एक दिन उसका मित्र लौट आया। वह मित्र आधी रात को वापिस लौटा और जब पेड़ के पास से गुजरा तो पेड़ ने पहचान लिया कि मित्र लौट आया है। उसने कहा – "मित्र मैं तुम्हारा इन्तजार करता था। तुम वापिस लौट आये, कैसी रही तुम्हारी यात्रा?"

मित्र ने कहा –"तुम कौन होते हो पूछने वाले, अभी मुझे बहुत ठण्ड लग रही है। अभी मुझे घर जाना है। क्या तुम्हारे कोई उपाय है मेरी ठण्ड दूर करने का जो तुम मुझे अपना मित्र कहते हो?" अब वो क्या कहे वृक्ष? उसने कहा – "मेरी साँसे तो दो चार ही शेष रही हैं, तुम्हारे आने का ही इन्तजार था। ये जीवन तो वैसे ही नष्ट होने को है। तुम्हारे पास थोड़ी सी आग, माचिस है ?" और उस बूढ़े मित्र ने बिना कुछ सोचे ठूंठ में आग लगाकर सारी रात अपनी ठण्ड मिटाई। पर वृक्ष अपनी आखिरी साँस तक हर्षित हुआ कि उसका जीवन किसी के काम आ सका ।

मुनिश्री क्षमासागर जी के प्रवचनों से साभार

Did you know ?

तीर्थकर की दिव्यध्वनि से गणधर श्रुत (ज्ञान) को धारण करते है और उनके द्वारा सतत् यह ज्ञान लोक में आगे बढ़ाया जाता है। भगवान महावीर स्वामी के गणधर इन्द्रभूति गौतम ने भी श्रुत धारण किया। उनकी परम्परा से लगभग 683 वर्ष बाद अंग और पूर्ववेत्ताओं की परम्परा समाप्त हो गई और सभी अंगो और परम्पराओं का एक देश ज्ञान आचार्य धरसेनाचार्य को प्राप्त हुआ। आचार्य पुष्दन्त और भूतबलि आचार्य ने षट्खण्डागम सूत्रों को पुस्तकबद्ध किया और ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन चतुर्विध संघसहित कृतिकर्मपूर्वक महापूजा की। इसी दिन से इस पंचमी का "श्रुतपंचमी" नाम प्रसिद्ध हो गया और तब से लेकर लोग श्रुतपंचमी के दिन श्रुत की पूजा करते आ रहे है। ज्ञान की आराधना का यह महान् पर्व हमें वीतरागी सन्तों की वाणी की आराधना और प्रभावना का सन्देश देता है। इस दिन धवल, महाधवल आदि ग्रन्थों को विराजमान कर महामहोत्सव के साथ उनकी पूजा करनी चाहिए।

Shrut Panchami: Marks the day of completion of first written text (Agama) of Jainism. The authors-monks 'Acharya Pushpadanta' and 'Bhootbali completed the text named 'Shatkhandagama' on this auspicious day about two thousand years ago.

We celebrate Shrut Panchami by worshipping the knowledge and the books (Jin vaani). The day reminds us the value and importance of books and knowledge. The real worship of knowledge or Jinvaani is performed by actually reading the books and putting the learning into practice.

Each one of us should read a good book himself, gift a good book, teach someone who is not literate, or help someone who cannot afford to buy books or pay school/college fees.

To help you head start we are giving a small list of must read books.

Hindi:
Meri Jeevan Gatha - Ganesh Prasad Varni
Meri Atmakatha Satya Ke Prayog - Mahatma Gandhi
Karma Kaise Karen - Munishri Kshamasagarji

English:
ABC of Jainism - Munishri Kshamasagarji
The Alchemist - Paulo Coelho
The Story of My Experiments with Truth - M. K. Gandhi

खुरपी लाओ पौधे रोपो

काट लिया सब
कुछ तो सौंपो
खुरपी लाओ
पौधे रोपो

ये पौधे, कल फल देंगे,
धरती को उर्वर जल देंगे,
जब ये जीवन को तारेंगे,
जब बादल को ललकारेंगे,
नदियाँ तुमको क्षमा करेंगीं
सदियाँ तुमको क्षमा करेंगी

छीन लिया सब
कुछ तो सौंपो
पौधे रोपो
पौधे रोपो।

– प्रो. सरोज कुमार, इंदौर

Shutdown your PCs

Most of us in the IT field are used to do one thing before leaving for the day from office, press Ctrl+Alt+ Del and leave for home happily. That means your PC is still on.

One normal PC in the sleeping mode (Hibernation) will consume 35 watts/hr. With 168 hours in a week, if we consider that we are working for 68 hours, then the PC is in sleeping mode for 100 Hrs a week. For one month this translates into 4 x 100 = 400 Hrs. In a normal IT office, if we assume approximately 250 PCs are there, this results into 250 x400 = 1,00,000 Hrs.

Therefore the average power wasted in an office in a month is, 100000 x 35 = 3500 KWH or units. If the charge per unit is Indian Rs. 6, then totally the wastage value is approximately 21000 Indian rupees.

Here the sad thing is not the money loss to the company but the power loss to the country. Many villages can get electricity with the units of electricity thus saved.

Small and easy ways to save our Mother Earth

- Unplug seldom used appliances.
- Turn off lights, computers and other appliances when not in use.
- Purchase appliances and office equipment with the Energy Star Label; old refrigerators, for example, use up to 50% more electricity than newer models.
- Use compact fluorescent light bulbs to save money and energy.
- Buy items in bulk from loose bins when possible to reduce the packaging wasted. Avoid products with several layers of packaging.
- Reuse items like bags and containers when possible.
- Reduce polythene bag usage.
- Use cloth napkins instead of paper tissues.
- Don't print unless it's really necessary.
- Reduce the use of disposable item. Buy products that you can reuse.
- Shop with a canvas/jute bag instead of paper and plastic bags.
- Buy rechargeable batteries for devices used frequently.
- Buy used furniture - there is a surplus of it, and it is much cheaper than new furniture.

संस्मरण

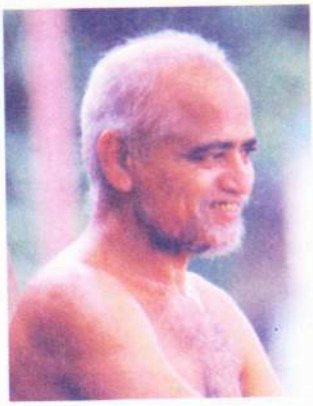

परीक्षा

चातुर्मास का समय था। क्षुल्लक सुमतिसागर जी की मुनि बनने की बडी भावना थी, साधना भी थी, पर वृद्ध हो गए थे। आचार्य महाराज ने उनकी भावना के अनुरूप उन्हें मुनि–दीक्षा दे दी। अब वे मुनि वैराग्यसागर हो गए। दो तीन माह तक उन्होंने महाव्रतों का बड़ी सावधानी से पालन किया, फिर जीवन का अंत निकट जानकर और वृद्धावस्था का विचार करके आचार्य महाराज से सल्लेखना ग्रहण कर ली।

मुनि–चर्या सर्वोत्कृष्ट चर्या है जिसकी साधना महान आत्माओं के द्वारा समतापूर्वक होती है। स्वस्थ व अस्वस्थ हर दशा में समता–भाव से अपने कर्त्तव्य का पालन करना आसान काम नहीं हैं। एक दिन विधिपूर्वक पड़गाहन के बाद जब वे जलग्रहण करने के लिए खड़े हुए तो अंजुलि बाँधकर जल ग्रहण करना मुश्किल सा लगा। जल नीचे गिर गया। आचार्य महाराज समीप ही खड़े थे। बोले " चाहो तो गिलास से ले लो। " हम सभी यह बात सुनकर चकित हुए, पर समझ गए कि परीक्षा की घड़ी है। सल्लेखना ग्रहण करने वाले क्षपक की परीक्षा प्रतिक्षण है। अत्यन्त वृद्ध होने के बाद भी एक सच्चे महाव्रती की तरह मुनि वैराग्यसागर जी ने ऐसा करने से इंकार कर दिया और शान्त भाव से अन्न–जल का जीवन पर्यन्त के लिये त्याग करके यम–सल्लेखना धारण कर ली।

आचार्य महाराज ने मुस्कराकर आशीर्वाद दिया। जैसे कहते हों कि सभी को एक दिन परीक्षा में उत्तीर्ण होना होगा। परीक्षा में बैठने और उसे उत्तीर्ण करने की तैयारी जीवन भर करते रहो।

बारिश

चिड़िया
भीग जाती है
जब बारिश आती है
नदी
भर जाती है
जब बारिश आती है
धरती
गीली हो जाती है

पर बहुत मुश्किल है
इस तरह
आदमी का
भीगना और
भर पाना

आदमी के पास
बचने का
उपाय है ना!

–मुनि क्षमासागर जी

Rain

The bird gets drenched
when it rains;
The river overflows,
The earth is soaked
when it rains.

But for man
when it rains,
it is hard
to get drenched,
hard to overflow.

Man knows
how to escape.

Translated by - Sunita Jain

'मुक्ति' से साभार

Your Space

कितना अच्छा होता है छोटा होना
उतना ही मुश्किल होता है बड़ा होना
अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना
अपने पैरों पर खड़ा होना
कितना अच्छा होता है
छोटा होकर शरारत करना
हर किसी से बगावत करना
हर पल गल्तियां करना
गुनाह करके भी निर्दोष बने रहना
उतना ही मुश्किल होता है
बड़े होकर अपनी जिम्मेदारियों को निभाना
अपने छोटे–बड़ों के बीच
एक सांमजस्य स्थापित करके चलना
खुद बढ़ना और औरों को आगे बढ़ाना
हर हाल में अपने बड़ेपन को निभाना

–नितिन जैन, चिरगांव

Super 30

Every year, some 230,000 students take the notoriously difficult exam for a spot in one of the prestigious Indian Institutes of Technology, but only 5,000 pass. Last year, 30 of them came from one coaching center in Patna, capital of the impoverished north Indian state of Bihar. That may not seem like many, but for the Super 30 center, it's a pass rate of 100%. What makes that feat even more remarkable is that these students are the poorest of the poor, who would otherwise never be able to afford full-time coaching. Super 30's founder, local mathematician Anand Kumar-who himself missed a chance to study at Cambridge because he didn't have enough money- gives full scholarships, including room, boarding and travel, to every batch of 30 students he accepts. It is reflected in the group, which comprises wards of brick kiln worker, rickshaw puller, landless farmer, roadside vendor and the likes. They have all seen the change with sheer disbelief in their eyes that their children are now going to be top technocrats.

Mindset

As my friend was passing by an elephant, he suddenly stopped, confused by the fact that these huge creatures were being held by only a small rope tied to their front leg. No chains, no cages. It was obvious that the elephants could, at anytime, break away from the ropes they were tied to but for some reason, they did not. My friend saw a trainer nearby and asked why these beautiful, magnificent animals just stood there and made no attempt to get away.

"Well," he said, "when they are very young and much smaller we use the same size rope to tie them and, at that age, it's enough to hold them. As they grow up, they are conditioned to believe they cannot break away. They believe the rope can still hold them, so they never try to break free." My friend was amazed. These animals could at any time break free from their bonds but because they believed they couldn't, they were stuck right where they were.

Like the elephants, how many of us go through life hanging onto a belief that we cannot do something, simply because we failed at it once before? So make an attempt to grow further.... Why shouldn't we try it again?

"Your attempt may fail, but never fail to make an attempt."
"Choose not to accept the false boundaries and limitations created by the past."

हमारा नया पता है :– मैत्री समूह, पोस्ट बॉक्स नं. 15 विदिशा (मध्यप्रदेश) 464001

Letters

चर्पिंग स्पेरो का नया अंक देखने को मिला। कम ही जैन पत्रिकायें इतनी सुसम्पादित और स्तरीय सामग्री से सम्पन्न होती हैं । बधाई। अपनी पुस्तक "भगवान महावीर का बुनियादी चिंतन " के 24वें संस्करण से ली सामग्री का आलेख देखकर प्रसन्नता हुई।

– जयकुमार 'जलज', रतलाम

मैं मैत्री समूह का आभार व्यक्त करती हूँ कि उसने मेरे विचारों का सम्मान किया। जब मैंने अपनी शंका का समाधान चर्पिंग स्पेरो में देखा तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। यह एक छोटी पत्रिका है पर ढेरों ज्ञान समाये हुई है। जब भी मैं निराश होती हूँ, चर्पिंग स्पेरो पढ़ लेती हूँ तो बहुत शान्ति मिलती है। यह मेरे लिए मुनिश्री क्षमासागर जी का आशीर्वाद है। मैं जल्दी उनका दर्शन करना चाहती हूँ।

– अनु बांझल, शाडोरा

I feel very happy to say that I am receiving Chirping Sparrow regularly which enriches our knowledge towards the spirituality. It feels great to tell you that I have received the Young Jaina Award 2004, and with MuniShri's blessings am presently posted as a Postal Assistant in Department of Posts and as an investigator in handicrafts under ministry of textiles. I would love to receive Chirping Sparrow in future also.

- Pulkit Jain

चर्पिंग स्पेरो का नया अंक बहुत अच्छा लगा। जिन पूजा के बारे में सीखने को मिला। भगवान महावीर स्वामी पर लिखा आलेख भी सुदंर है। चर्पिंग स्पेरो का हर शब्द सुन्दर और सलेक्टेड है। जब भी इसे पढ़ता हूँ तो ऐसा महसूस होता है कि मुनिश्री क्षमासागर जी के चरणों में बैठा हूँ और उनके श्रीमुख से ये दिव्य शब्द मुखरित हो रहे हैं। मेरे कुछ सुझाव हैं यदि अच्छे हों तो शामिल करियेगा। मानवता / सामाजिकता देशभक्ति, धार्मिक उपलब्धियों वाले व्यक्तियों के बारे में जानकारी प्रकाशित करें। क्विज पर आधारित कॉलम शुरू करें। मुझे लगता है इस से मानवता को बचाने का प्रयास कर सकेंगे। लोग मानवता के बारे में सोचेंगे, नहीं तो इन दिनों सभी पैसे के पीछे ही भाग रहे हैं।

– नितिन जैन, चिरगांव

महत्वपूर्ण चिट्ठी

मानवता बने योग्यता

कड़कड़ाती बिजली के साथ तेज बारिश हो रही थी। ऐसा लग रहा था मानों तूफान दस्तक दे रहा हो। एक अधेड़ दंपत्ति ने एक होटल में प्रवेश किया, काउंटर पर मौजूद क्लर्क से उस दंपत्ति ने रात्रि बिताने के लिए एक कमरा मांगा। क्लर्क ने कहा, ''सभी कमरे भरे हुए हैं।'' उम्रदराज सज्जन ने निवेदन करते हुए कहा, ''हम सभी होटलों में घूम आए हैं, कहीं भी जगह नहीं है। इस तूफानी रात में हम कहाँ जाएंगें?''

क्लर्क ने जवाब दिया, ''यहां तो जगह नहीं है, क्या आप दोनों मेरे कमरे में रहना पसंद करेंगे ?'' ''और तुम?'', पुरूष ने पूछा। ''आप मेरी चिंता न करें, मैं तो यहीं कहीं मेज पर सो जाऊंगा, किंतु मेरा कमरा बहुत छोटा है और बहुत साधारण सा बिस्तर है, क्या आपको अच्छा लगेगा ?'' क्लर्क ने फिर पूछा। दंपत्ति ने सहमति दे दी और रात कमरे में गुजारी। सुबह वह दंपत्ति धन्यवाद देकर चले गए।

थोड़े दिन बाद क्लर्क के नाम एक पत्र आया, उसमें क्लर्क को न्यूयॉर्क आने का निमंत्रण था और साथ में आने–जाने के हवाई जहाज के टिकट थे। क्लर्क न्यूयॉर्क पहुँचा, तो उसे मालूम हुआ कि वह दंपत्ति अमेरिका के प्रसिद्ध न्यायाधीश विलियम वेल्फोर्ड़ और उनकी पत्नी थे। विलियम वेल्फोर्ड़ उस क्लर्क को एक विशाल होटल में ले गए, जहां लिखा था वेल्फोर्ड होटल। न्यायाधीश वेल्फोर्ड़ ने उस क्लर्क से कहा 'आज से तुम इस होटल के मैनेजर हो बल्कि यह मानो कि यह होटल ही तुम्हारा है।' वेल्फोर्ड़ की बात सुनकर क्लर्क ने पूछा– मैं एक साधारण–सा क्लर्क क्या इतना बड़ा होटल संभाल सकूंगा? वेल्फोर्ड ने जवाब दिया, 'हां तुममें मानवता है और बड़े से बड़े दायित्व को संभालने के लिए इतनी योग्यता पर्याप्त है।'